ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23060
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23060

CONFERENCE PAPER

भारतीय संगीत के सामाजिक-आर्थिक विकास में तबले के पश्चिमी बाज़ की भूमिका

गगनदीप सिंह

1. शोधकर्ता संगीत विभाग पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला.

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

Abstract

अवनद्ध वाद्य में से तबले को आधुनिक समय में एक प्रमुख ताल वाद्य के रूप में प्रयोग किया जाता है। तबला आधुनिक समय का एक ऐसा वाद्य है जिसका उपयोग हिंदुस्तानी संगीत की सभी शैलियों में किया जाता है। जिस प्रकार भारतीय संगीत विश्वसंगीत में एक विशेष स्थान रखता है, उसी प्रकार तबला भी भारतीय संगीत में एक अनूठा स्थान रखता है। तबला वादन के क्षेत्र में अनगिनत ऐसे व्यक्तित्व हैं जिन्होंने संगत कलाकारों और स्वतंत्र तबला वादकों के रूप में इस कला को आगे बढ़ाया है। समय के साथ, यह कला घरानों में विकसित हुई और घराना परम्परा के उदय के साथ, तबला वादन भारत के हर कोने में फैल गया।

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Introduction:-

घराना :-

हिंदुस्तानी संगीत परम्परा में घरानों का विशेष स्थान है। घराने का अर्थ है एक विशेष गुरु-शिष परम्परा । घराना 300-400 साल से अधिक पुराना नहीं है। जब कोई विशेष संगीत शैली गुरु-शिष परम्परा के माध्यम से कम से कम तीन पीढ़ियों तक प्रचलित रहती है, तब घराना अस्तित्व में आता है। हमारी प्राचीन संगीत परम्परा इसी घराने में संरक्षित है। हिंदुस्तानी संगीत के सभी महान कलाकार विभिन्न घरानों की देन हैं। घराना शब्द की उत्पत्ति ऐसा माना जाता है कि यह शब्द 'घर' से लिया गया है। "आमतौर पर, घराना शब्द का अर्थ 'वर्ग', 'परम्परा ', 'पंथ', 'परिवार', 'पारिवारिक परम्परा ', 'घर', 'टकसाल' आदि से लिया जाता है।" 'घराना' शब्द हिंदुस्तानी संगीत परम्परा में पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही गायकों, संगीतकारों और नर्तकों की एक विशेष शैली को इंगित करता है।

Corresponding Author:- गगनदीप सिंह
Address:- शोधकर्ता संगीत विभाग पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला.

घराना शैली जिस कलाकार द्वारा निर्मित की जाती है, उन्हें इस घराने का संस्थापक माना जाता है, यानी घराने का नाम उनके नाम या निवास स्थान के नाम पर रखा जाता है। तबला के विभिन्न घरानों के नाम भी संस्थापकों के निवास स्थानों के नाम पर आधारित हैं। इस प्रकार, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में तबला के छह घराने अस्तित्व में आए।

घराने का नाम	*संस्थापक कलाकारों के नाम*
दिल्ली घराना	उस्ताद सिधार **खां**
अजराड़ा घराना	उस्ताद कुल्लू **खां** और उस्ताद मिरू **खां** (उस्ताद सिधार **खां** के पोते सिताब **खां** के शिष्य)
लखनऊ घराना	उस्ताद मोदू **खां** और उस्ताद बख्शू **खां** (उस्ताद सिधार **खां** के अज्ञात पुत्र के शिष्य और पुत्र)
फर्रुखाबाद घराना	उस्ताद हाजी विलायत अली **खां** (उस्ताद बख्शू **खां** के शिष्य)
बनारस घराना	पंडित राम सहाय (उस्ताद मोदू **खां** के शिष्य)
पंजाब घराना	उस्ताद फकीर बख्श (पखावजी लाला भवानीदास के शिष्य)

वादन प्रणाली और वादन शैली को 'बाज़' कहा जाता है। डॉ. आबान ई. मिस्त्री के अनुसार, "बाज़ शब्द संगीत प्रणाली या वादन शैली के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है।" लोकप्रिय तबला वादन शैलियों की मुख्य शैली को दो भागों में बांटा गया है जिन्हें 'पश्चिमी बाज' और 'पूर्वी बाज' कहा जाता है। पश्चिमी बाज में दिल्ली और अजराड़ा घराना की तबला वादन शैली शामिल है। इस बाज में दो उंगलियों और किनार बोलों का प्रयोग होता है, इसलिए इसे 'किनार का बाज' भी कहा जाता है। दिल्ली और अजराड़ा घराना के बाज को 'बंद बाज' भी कहते हैं। पूर्वी बाज में लखनऊ, फर्रुखाबाद और बनारस घराना की तबला वादन शैली शामिल है। इस बाज की ध्वनि गूंजदार और शक्तिशाली होती है क्योंकि यह पखावज के करीब है, जिसमें दो उंगलियों के साथ-साथ पूरे पंजे का भी प्रयोग होता है। इस बाज को 'खुल्ला बाज' भी कहते हैं। पंजाब घराना पखावज से प्रभावित है। इस शैली में पखावज के बोल बंद करके बजाए जाते हैं। इसलिए, पंजाब घराना को वर्तमान समय में पूर्व की एक शैली भी माना जाता है।

दिल्ली घराना:-

दिल्ली घराना तबले का सबसे प्राचीन घराना है। इसी घराने से तबला के चार अन्य घराने निकले हैं। इसी घराने ने तबला के मूलभूत सिद्धांतों की स्थापना की हैं। यह भी कहा जा सकता है कि तबला वादन घरानो के गठन में दिल्ली घराने ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यही कारण है कि अन्य घरानों की तुलना में इस घराने का एक विशेष स्थान है। दिल्ली घराने के आविष्कार का श्रेय उस्ताद सिधार खां को जाता है। "उस्ताद सिधार खां दिल्ली के निवासी थे। इसी कारण उनके बाज को दिल्ली बाज या दिल्ली घराना कहा जाता था। ऐसा माना जाता है कि दिल्ली घराने की शुरुआत उन्हीं से हुई थी। पखावज में जो काम पंजे से किया जाता था, वह इस वाद्ययंत्र में उंगलियों से किया जाता था और आवश्यकतानुसार बोल भी बदली कर लिए थे।" उस्ताद सिधार खां ने पखावज के खुले बोलों को बंद करके तबले पर बजाने योग्य बनाकर और उंगलियों की स्थिति में बदलाव करके तथा मुख्य रूप से किनार शैली की कुछ रचनाएँ करके एक महत्वपूर्ण परिवर्तन किया। उस्ताद सिधार खां द्वारा विकसित वादन शैली को उनके वंशजों और शिश परम्परा ने आगे बढ़ाया। दिल्ली घराना के संस्थापक उस्ताद सिधार खां के पुत्रों, उस्ताद बुगरा खां और उस्ताद घसीट खां के बारे में जानकारी उपलब्ध है, लेकिन विभिन्न विद्वानों के अनुसार, तीसरे पुत्र के बारे में कोई विशिष्ट जानकारी उपलब्ध नहीं है। उस्ताद सिधार खां के बड़े पुत्र, उस्ताद बुगरा खां के दो पुत्र, उस्ताद सिताब खां और उस्ताद गुलाब खां, दिल्ली घराना के प्रसिद्ध तबला वादकों के रूप में जाने जाते हैं। दिल्ली घराना का विकास उस्ताद सिताब खां की परम्परा से हुआ है। उनके शिष्यों ने कई महान तबला वादक दिए हैं, जिनमें उनके पुत्र उस्ताद नजर अली और उस्ताद बड़े काले खां शामिल हैं। इनके अलावा, उस्ताद बड़े काले खां के पुत्र उस्ताद बोली बख्श खां और पोते नत्थू खां के नाम भी दर्ज हैं। उस्ताद सिधार खां के छोटे पुत्र घसीट खां के शिष्य के बारे में कोई विशिष्ट जानकारी उपलब्ध नहीं है, लेकिन उनके दो पुत्र उस्ताद मोदू खां और उस्ताद बख्श खां थे, जिन्होंने जिन्होंने लखनऊ आकर लखनऊ घराना की नींव

रखी थी। दिल्ली घराने के महान तबला वादक उन्होंने समय के साथ कई प्रसिद्ध शिष्यों को तैयार किया है, जिनमें रोशन खां, कुल्लू खां और तुलन खां शामिल हैं, जो उस्ताद सिधार खां के प्रमुख शिष्यों में से थे और महान तबला वादक बने। अजराड़ा घराना की नींव रखने वाले दो भाई, उस्ताद कुल्लू खां और उस्ताद मीरू खां, उस्ताद बोली बख्श की परम्परा में उस्ताद सिताब खां के शिष्य रहे हैं। उस्ताद बोली बख्श के शिष्य मुनीर खां ने भी उनके कई शिष्यों को तैयार किया है, जिनमें उस्ताद अमीर हुसैन खां, उस्ताद अहमद जान थिरकवा आदि महान तबला वादक हैं। उस्ताद नत्थू खां के शिष्य उस्ताद हबीबुद्दीन खां एक प्रसिद्ध तबला वादक बने हैं। दिल्ली घरा**ने** का आधुनिक समय प्रतिनिधित्व करने वाले प्रमुख तबला वादक उस्ताद रफीउद्दीन साबरी, उस्ताद बाबर लतीफ, उस्ताद अकबर लतीफ, उस्ताद जफर मुहम्मद, पंडित सुभाष निर्वाण आदि।

दिल्ली घराना की वादन शैली और विशेषताएं:-

दिल्ली घराना तब**ले** का पहला घराना होने के नाते, अपनी विशिष्ट और मौलिक विशेषताओं के कारण तबला वादन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। दिल्ली घराने में तबला बजाते समय मुख्य रूप से दो उंगलियों, तर्जनी और मध्यमा, का प्रयोग किया जाता है। इसी ने इस घराने को कोमलता और मधुरता का भाव प्रदान किया है। दिल्ली घराने के बोल अधिकतर किनार और सियाही पर आधारित होते हैं, इसलिए इस घराने को 'किनार का बाज' भी कहा जाता है। इसे दो उंगलियों वाला बाज भी कहते हैं क्योंकि 'तिट' और 'तिरकिट' जैसे बोलो में केवल दो उंगलियों का प्रयोग होता है, और कभी-कभी 'तिरकिट' में तीन उंगलियों का प्रयोग होता है। दिल्ली घराना के क़ायदा और रेले मुख्यतः किनार प्रधान होते हैं, जिन्हें तबले पर हाथ उठाए बिना तर्जनी और मध्यमा उंगलियों से बजाया जाता है। लेकिन इस घराने में डग्गे पर मींड का प्रयोग नहीं देखा जाता, जो अजराड़ा घराना की प्रमुख विशेषता है। "यह घराना ख्याल गायन के साथ संगत के लिए सफल रहा है, लेकिन ध्रुपद गायन और कथक नृत्य आदि के साथ संगत के लिए पूरी तरह सफल नहीं हो सका, क्योंकि ध्रुपद और नृत्य के लिए थोड़ी अधिक गंभीर वादन शैली की आवश्यकता होती है।" इस घराने की वादन शैली में धातिट, तिरकिट, धिनागिन्ना, धागेना, ताकेना, धातीगिन्ना, तिन्नाकिन्ना आदि बोलो का प्रधानता है। इस घराने की वादन शैली के अंतर्गत, पेशकार, क़ायदा, मुखड़ा, छोटे-छोटे टुकड़े और छोटी गता को विभिन्न लय में बजाना विशेष रूप से प्रचलित है। इस घराने का एक महत्वपूर्ण क़ायदा हैं, जिनका पालन प्रत्येक नए तबला छात्र को, चाहे वह किसी भी घराने के कलाकार से सीखना शुरू करे, इस तिनताल **के** क़ायदा से शुरू करना सिखाया जाता है, जो इस प्रकार हैं:-

ताल - तीन ताल (कायदा 1)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
x				2				o				3			
धाति	**टधा**	**तिट**	**धाधा**	**तिट**	**धागे**	**तिना**	**किना**	ताति	टता	**तिट**	ताता	**तिट**	**धागे**	**धीना**	**गिना**

अजराड़ा घराना:-

दिल्ली के पास उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में अजराड़ा नाम का एक गाँव है। वहाँ रहने वाले दो भाई, उस्ताद कुल्लू खां और उस्ताद मीरू खां ने दिल्ली में रहते हुए दिल्ली घराना के संस्थापक उस्ताद सिधार खां के पोते उस्ताद सिताब खां से तब**ले** की शिक्षा प्राप्त की। तब**ले** की शिक्षा पूरी करने के बाद दोनों भाई अपने गाँव अजराड़ा लौट आए। इन दोनों भाइयों ने दिल्ली घराना से प्राप्त शिक्षा को अपनी प्रतिभा, कल्पनाशीलता और समय की आवश्यकता के अनुसार परिवर्तित करके दिल्ली **वादन** शैली को नया रूप दिया और अजराड़ा घराना की नींव रखी। उस्ताद कुल्लू खां और उस्ताद मीरू खां के वंशजों और शिष्यों ने उनकी **वादन** शैली को आगे बढ़ाया और अजराड़ा घराना को प्रसिद्धि दिलाई। अजराड़ा घराना के संस्थापकों, उस्ताद कुल्लू खां और उस्ताद मीरू खां के वंश में उस्ताद मुहम्मदी बख्श, चांद खां, कुतुब खां, काले खां, तुलन खां आदि प्रसिद्ध तबला वादक रहे हैं। उस्ताद कुतुब खां के बेटे उस्ताद हसु खां

और उनके वंश और शिष्यों में से उस्ताद बंबू खां, उस्ताद सम्मू खां और उस्ताद नन्हे खां ने भी तबला वादन के क्षेत्र में प्रसिद्धि हासिल की है। इनके अलावा उस्ताद सम्मू खां के पुत्र और शिष्य उस्ताद हबीबुद्दीन खां ने भी अजराड़ा घराने की वादन शैली का प्रचार-प्रसार किया और कई शिष्य तैयार किये। इस घराने में वर्तमान तबला वादकों में उस्ताद हाशमत अली खां के पुत्र उस्ताद अकरम खां का नाम प्रमुख है। इनके अलावा पंडित मुकुंदराज देव, पंडित सुधीर पांडे, डॉ. अनिल कुमार, उस्ताद शकील अहमद, उस्ताद गुलाम साबरी, उस्ताद अख्तर हुसैन, श्री जुहेब अहमद खां आदि के नाम भी उल्लेखनीय हैं।

अजराड़ा घराना की संगीत शैली और विशेषताएँ:-

अजराड़ा घराना दिल्ली घराने की उपज है, इसलिए इस घराने की वादन शैली पर दिल्ली घराने का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। साथ ही, इस घराने के कलाकारों ने अपनी प्रतिभा और कल्पनाशीलता के बल पर तबला वादन की एक नई शैली का आविष्कार किया है। दिल्ली घराने की वादन शैली में तर्जनी और मध्यमा उंगलियों का प्रयोग अधिक प्रचलित था, लेकिन अजराड़ा घराने में इन दोनों उंगलियों के साथ अनामिका उंगली का भी प्रयोग किया जाता था। अनामिका उंगली के प्रयोग से घिनगिन जैसे बोलो में 'न' बोल बजाया जाता हैं। अजराड़ा घराने के वर्तमान प्रमुख तबला वादक उस्ताद अकरम खां के अनुसार, "दिल्ली घराने में जहां दायां तबले की प्रधानता रहती है वहां अजराड़ा घराने में दाएं और बाएं तबले के समान प्रभुत्व के कारण तिस्र जाती के कायदे अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।" अजराड़ा घराना के कायदे अपनी सुंदरता और विविधता के लिए प्रसिद्ध हैं, क्योंकि इनमें आड लयकारी का अधिक प्रयोग होता है। दिल्ली घराना की तुलना में अजराड़ा घराना के कायदे का विस्तार कम है, क्योंकि इस घराने के बोल कठिन हैं। इसी कारण इन बोलो को उलटने की गुंजाइश कम है। जिस प्रकार दिल्ली घराना के कायदा 'धा' बोल से प्रारंभ होते हैं, उसी प्रकार इस घराना के कायदे कभी-कभी 'धिन' बोल से वी प्रारंभ होते हैं, जिससे बाएँ तबले को भरा हुए दर्शाया जाता है। इस घराने में आड लयकारी को तेजी से दर्शाने के लिए 'न' बोल न केवल तर्जनी से ही नहीं, बल्कि कभी-कभी अनामिका से भी बजाया जाता है। अजराड़ा घराना की कई रचनाओं में धातक, थेतक, घेना, घिनक, घेघेतक, धिगन, धित आदि बोल समूहों का अधिक प्रयोग होता है, जो अन्य घरानों में कम ही देखने को मिलता है। इस घराने के बोलो की मधुरता के कारण, इसे स्वतंत्र रूप से बजाने के लिए अत्यंत सुंदर माना जाता है। अजराड़ा घराने की तिस्र जाती (आड लय) से संबंधित एक रचना का उदाहरण नीचे दिया गया है:-

ताल – तीन ताल का कायदा

1	2	3	4	5	6	7	8
x				2			
धागेधिं	**नागिंन्ना**	**धातिरकिट**	**तकधिरधिर**	**किटतकतिर**	**किटधाती**	**धागेतिं**	**नाकिंन्ना**
9	10	11	12	13	14	15	16
0				3			
ताकेतिं	**नाकिना**	**तातिरकिट**	**तकधिरधिर**	**किटतकतिर**	**किटधाती**	**धागेधिं**	**नागिंन्ना**

सामाजिक विकास में पश्चिमी बाज़ की भूमिका:-

भारतीय संगीत में तबला **के** 'पश्चिमी बाज़'(दिल्ली और अजराड़ा घराना) ने सामाजिक विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस बाज़ ने तबला वादक को केवल राज दरबारों तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि इसे आम लोगों और मध्यम वर्ग तक भी पहुँचाया है। इसकी कोमलता और स्पष्टता ने विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि के लोगों को सीखने के लिए प्रेरित किया, जिससे संगीत में जात पात के बंधन कमजोर हुए **हैं**। पश्चिमी बाज़ की शिक्षाओं ने गुरु-शिष्य परम्परा को एक नई दिशा दी, जहाँ ज्ञान का आदान-प्रदान सामाजिक सीमाओं को पार कर गया। साथ ही, तबला की इस शैली ने कलाकारों को समाज में एक सम्मानजनक पहचान दिलाई, जिसके कारण यह मात्र मनोरंजन का साधन न रहकर एक पवित्र और पेशेवर कला के रूप में उभरी। दिल्ली घराना की वादन शैली ने 'जुगलबंदी'

और 'फ्यूजन' को प्रोत्साहित किया, जिसने विभिन्न संस्कृतियों के लोगों को एक साथ लाया और सामाजिक एकता को बढ़ाया। पश्चिमी बाज़, विशेष रूप से तबला के अजराड़ा घराना ने तिस्र जाती के कायदों को विकसित किया जिससे तबले को एक संगत वाद्य यंत्र से एक स्वतंत्र 'एकल' वाद्य यंत्र के रूप में ऊपर उठाया गया है, जिसने समाज में कलाकार की स्थिति को ऊपर उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस प्रकार, पश्चिमी बाज़ ने समाज में सांस्कृतिक एकता और कलात्मक चेतना के सृजन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आर्थिक विकास में पश्चिमी बाज़ की भूमिका:-

भारतीय संगीत की आर्थिक संरचना में पश्चिमी तबला (दिल्ली और अजराड़ा) का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस बाज की सबसे बड़ी विशेषता इसकी बहुमुखी प्रतिभा है। इस शैली की कोमलता और स्पष्टता के कारण रिकॉर्डिंग स्टूडियो, फिल्म संगीत, ग़ज़लों और मधुर संगीत में इसकी बहुत मांग रही है। इस मांग ने तबला वादकों के लिए नए और स्थिर रोजगार के अवसर पैदा किए हैं। आर्थिक दृष्टि से, इस बाज ने तबला निर्माण उद्योग को भी बढ़ावा दिया है। जैसा कि सामाजिक विकास में पहले उल्लेख किया गया है, पश्चिमी संगीत में भी तबला वादन की मांग लगातार बढ़ी है। पश्चिमी संगीत में विशेष रूप में 'छोटा मुंह' और ऊँची पिच वाले तबले की आवश्यकता है, इसीलिए कारीगर की कमाई बढ़ गई है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, इस शैली की बारीकियों को सीखने के लिए विदेशी छात्रों की बढ़ती रुचि ने 'संगीत पर्यटन' और ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से विदेशी मुद्रा के प्रवाह को बढ़ा दिया है। इस तरह, पश्चिमी बाज़ ने कलाकार को महज एक वाद्य यंत्र बजाने वाले से आर्थिक रूप से मजबूत पेशेवर में बदल दिया है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि दिल्ली और अजराड़ा घराना दोनों ही भारतीय शास्त्रीय संगीत में तबला वादन को नई ऊंचाइयों पर ले जा रहे हैं और इसकी लोकप्रियता बढ़ा रहे हैं। अजराड़ा घराने की जटिल लय और दिल्ली की बुनियादी तकनीक ने संगीत को एक पेशेवर रूप दिया है, जिससे कलाकारों के सामाजिक-आर्थिक जीवन स्तर में सुधार हुआ है। आज के संदर्भ में, ये घराने भारतीय संगीत के विकास के स्तंभ हैं, जो सांस्कृतिक विरासत के साथ-साथ आर्थिक समृद्धि के नए रास्ते खोल रहे हैं।

हवाले और टिप्पणियां:-

1. डॉ. शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी, संगीत में घराना, संगीत कला विहार, जुलाई 2011, पृष्ठ संख्या 06
2. डॉ. अबान-ए-मिस्त्री, पंद्रह और अन्य तबला घराना और परंपराएं, 2. स्वर साधना समिति, मुंबई, (1984), पृष्ठ संख्या 125
3. जमुना प्रसाद पटेल, तबला-वादन की विस्तृत रचनाएँ (पेशकार, क़ायदा और राले के विशेष संदर्भ में), कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली (2011), पृष्ठ संख्या 14
4. डॉ. मनोहर भालचंद्रारो मराठे, लयबद्ध संगीत, शर्मा पुस्तक सदन ग्वालियर, 1970,पृष्ठ संख्या 125
5. शोध प्रबंध, दिल्ली और फर्रुखाबाद घराना की औपचारिक तबला वादन परंपरा और विशेषज्ञता का तुलनात्मक अध्ययन, खेर अमित सतीश, महाराजा सियाजी राव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, 2019
6. तबला पुराण, पंडित विजय शंकर मिश्र, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ संख्या 21
7. डॉ. सुनीता श्रीवास्तव, तबला वादन की तकनीकी और सौंदर्यपूर्ण विशेषताएं, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, 2012, पृष्ठ-173
8. व्यक्तिगत वार्तालाप, उस्ताद अकरम खां (तबला वादक), पटियाला, 12 दिसंबर 2025